International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 17-11-2020; Accepted: 02-12-2020; Published: 17-12-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 164-166

मध्यप्रदेश में कृषि विकास की समस्याऐं

मदन ठाकरे[1], डॉ. कंचन श्रीवास्तव[2]
[1] शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, श्री सत्य साँई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत
[2] शोध निर्देशिका, श्री सत्य साँई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
लगभग वर्ष 1981–82 में पटवारी अभिलेखो तथा वन अभिलेखो के अनुसार राज्स का कुल क्षेत्रफल 4,42,10,835 हेक्टेयर है, जिसमें से 3,70,63,201 हैक्टेयर पटवारी अभिलेखों अर्थात राजस्व क्षेत्रफल के रुप में प्रतिवेदित किया गया है।
भारत के महासर्वेक्षक द्वारा प्रतिवेदित भौगौलिक क्षेत्रफल 44324100 हैक्टेयर पटवारी एवं वन अभिलेखों पर आधारित कुल क्षेत्रफल से 1,13,265 हैक्टेयर अर्थात 0,3 प्रतिशत कम है। इस अंतर का मुख्य कारण यह है कि दोनों अभिकरणो द्वारा क्षेत्रफल का अनुमान लगाने के लिए अलग–अलग पद्वतियाँ अपनाई जाती है। इसके अतिरिक्त कुछ क्षेत्रों का किस्तवार भू –मापन नही हुआ है। राज्य के क्षेत्रफल का सही –सही अनुपात लगाने के लिए शासन द्वारा किस्तवार भू –मापन करके संबंधी योजना कियान्वित की गई है।
वर्ष 1981–82 में पटवारी तथा वन विभाग के अभिलेखों के अनुसार राज्य का कुल क्षेत्रफल गत वर्षो की तुलना में 56 हेक्टेयर अधिक है। जिसका कारण मंदसौर जिले में सीमा विवाद सुलझाने से 11 हेक्टेयर कम व पन्ना जिले के अपरमापित क्षेत्र का भू –मापन होने के फलस्वरुप 67 हेक्टेयर क्षेत्रफल की वृद्वि होना है। आजादी के पश्चात् जब देश में खाद्य संकट पैदा हो गया तब भारतीय सरकार ने विदेशों से खाद्यान्न का आयात किया। 1949 में देश में 37 लाख टन खाद्यान्न का आयात किया। देश का आर्थिक विकास कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में ही निहित है इस बात को ध्यान में रखते हुए शासन ने सर्वप्रथम 1947–48 में ''अधिक अन्न उपजाओं'' अभियान शुरू किया और अगले पांच वर्षों में 40 लाख टन अतिरिक्त खाद्यान्न उत्पादन का लक्ष्य रखा गया। 1947 में महात्मा गांधी क सुझावों पर अन्न पर से नियंत्रण हटा लिया गया । यह नियंत्रण 1943 में अन्न के अभाव एवं मूल्य में अत्याधिक वृद्धि के कारण सरकार द्वारा खाद्यान्न के मूल्यों पर लगाया गया था। 1948 में पुनः मूल्य नियंत्रण की नीति अपनायी क्योंकि अन्न के मूल्य में 50 प्रतिशत की वृद्धि हो गई थी। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक प्रकोप भी खाद्य समस्या को दबाने में सहायक रहे।
देश की खाद्य समस्या को सुलझाने एवं देश के आर्थिक विकास के लिए सोवियत संघ की भांति भारत सरकार ने योजनाओं का आश्रय लिया तथा योजना के माध्यम से देश का विकास किया जाने लगा।

मूलशब्द: अभिलेखो, राजस्व, आर्थिक विकास, अर्थव्यवस्था, कृषि

प्रस्तावना
वर्ष 1981–82 में पटवारी अभिलेखो तथा वन अभिलेखो के अनुसार राज्स का कुल क्षेत्रफल 4,42,10,835 हेक्टेयर है, जिसमें से 3,70,63,201 हैक्टेयर पटवारी अभिलेखों अर्थात राजस्व क्षेत्रफल के रुप में प्रतिवेदित किया गया है।
भारत के महासर्वेक्षक द्वारा प्रतिवेदित भौगौलिक क्षेत्रफल 44324100 हैक्टेयर पटवारी एवं वन अभिलेखों पर आधारित कुल क्षेत्रफल से 1,13,265 हैक्टेयर अर्थात 0,3 प्रतिशत कम है। इस अंतर का मुख्य कारण यह है कि दोनों अभिकरणो द्वारा क्षेत्रफल का अनुमान लगाने के लिए अलग–अलग पद्धतियाँ अपनाई जाती है। इसके अतिरिक्त कुछ क्षेत्रों का किस्तवार भू –मापन नही हुआ है। राज्य के क्षेत्रफल का सही –सही अनुपात लगाने के लिए शासन द्वारा किस्तवार भू –मापन करके संबंधी योजना कियान्वित की गई है।
वर्ष 1981–82 में पटवारी तथा वन विभाग के अभिलेखों के अनुसार राज्य का कुल क्षेत्रफल गत वर्षो की तुलना में 56 हेक्टेयर अधिक है। जिसका कारण मंदसौर जिले में सीमा विवाद सुलझाने से 11 हेक्टेयर कम व पन्ना जिले के अपरमापित क्षेत्र का भू –मापन होने के फलस्वरुप 67 हेक्टेयर क्षेत्रफल की वृद्वि होना है। भूमि की उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुए भूमि के वर्गीकरण को नौ भागों में विभाजित किया गया है। जिसे आगे की तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 1: भूमि का क्षेत्रफल

क्रं.	वर्ग	क्षेत्रफल वर्ष 1981–82	क्षेत्र का प्रतिशत
1.	वन ए.राजस्व विभाग के अंतर्गत बी. वन विभाग के अंतर्गत आरक्षित वन संरक्षित वन	6886226 5622773 1525041	15.6 12.7 3.4
2.	ऊसर व गैर मुमकिन भूमि	2347440	5.3
3.	कृषि को छोड़कर अन्य कार्य में लाई गई भूमि	2223142	5.0
4.	कृषि योग्य भूमि	1835850	4.2
5.	मुस्तकिल व अन्य चारागाह	2819793	6.4
6.	दीगर झाड़ो के झुंड तथा बाग जो फसलों के क्षेत्र में शामिल नही है।	176991	0.4

7.	चालू पड़ती	860147	2.0
8.	पुरानी पड़ती	1072410	2.4
9.	फसल का निरा क्षेत्रफल	18841022	42.6
	योग	44210835	100.0

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रदेश के एक बड़े भाग पर कृषि कार्य होता है। आलोच्य वर्ष में गत वर्ष की तुलना में वन ,कृषि योग्य भूमि तथा पड़ती एवं पुरानी पड़ती के क्षेत्रफल में क्रमशः 11116, 71359, 61759 एवं 23993 हेक्टेयर अर्थात 0,1,3,8,6,7 एवं 2.2 प्रतिशत की कमी हुई जबकि दीगर झाड़ो के झुंड में इसका कारण चालू पड़ती एवं पुरानी पड़ती के क्षेत्रफल में कमी होना है। आलोच्य वर्ष में गत वर्ष की तुलना में कुल क्षेत्रफल में 56 हेक्टेयर की वृद्वि हुई है जो कि नगण्य है।

मध्य प्रदेश की प्रमुख उपजें

मध्यप्रदेश में विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन होता है। चावल, ज्वार, बाजरा ,गेहूँ, मक्का आदि धान्य एवं अन्य छोटे अनाज के उत्पादन के लिए राज्स की अधिकतर भूमि काम में लाई जाती है।दालें भी कुल उत्पादन में अपना स्थान रखती हैं। फसलों के आधार पर मध्य प्रदेश को आठ कृषि प्रदेशो में विभाजित किया गया है।

1. **ज्वार प्रदेशः** पश्चिमी मुरैना, शिवपुरी, तथा गुना
2. **गेहूँ प्रदेशः** संपूर्ण बुदेलखंड का पठार तथा मालवा के मध्य भाग के अतिरिक्त पश्चिमी मुरैना, ग्वालियर, भिंड, पूर्वीगुना विदिशा भोपाल, रायसेन सागर और रीवां के जिले।
3. **कपास गेहूँ क्षेत्रः** मंदसौर उज्जैन, शाजापुर, राजगढ़ देवास सीहोर
4. **कपास क्षेत्रः** मुख्यतः रतलाम, झाबुआ, धार तथा खरगौन
5. **चावल, कपास क्षेत्रः** पूर्वी निमाड़।
6. **चावल, ज्वार, कपास क्षेत्रः** बैतूल ,छिदवाड़ा ,सिवनी।
7. **चावल क्षेत्रः** संपूर्ण पूर्वी मध्य प्रदेश।
8. **कोदों कुटकी क्षेत्रः** पश्चिमी बस्तर में एक छोटा क्षेत्र।

यद्यपि तिलहनों की दुनिया में सोयाबीन सबसे पुरानी फसलों में से एक है किन्तु हमारे प्रदेश के लिए एक नई फसल है इसे काली तुअर अथवा भाटके नाम से भी जाना जाता है। विश्व का सबसे कम खर्चीला प्रोटीन प्राप्त करने वाला स्त्रोत सोयाबीन ही है। सोयाबीन के अनेकों उपयोग हैं। केन्द्र सरकार ने म.प्र. को सोयाबीन राज्य घोषित कर दिया है। और सातवी योजना में राज्य में सोयाबीन उत्पादन को बढ़ाने के प्रयास किये जाएगें ।राज्य में सोयाबीन की खेती छठी योजना के आरंभ में शुरु हुई थी तथा वर्ष1983–84 में वार्षिक उत्पादन 1 लाख टन हो गया । छठी योजना के अंत में 11 लाख टन तक पहुँच गया।

कहा जाता है कि, सोयाबीन का उत्पादन स्थान दक्षिण पूर्वी एशिया है। यह चीन में खाए जाने वाले 6 खाद्यान्नों में से एक है। यूरोपीय देशों में इसका उपयोग। 11वीं सदी में होना शुरू हो गया था। भारत में यह फसल चीन से लाई गई और मद्रास में इसकी ख्योती होना प्रारंभ हुआ। कृषि विशेषज्ञों का ध्यान सोयाबीन की ओर 1964 के बाद ही आकर्षित हुआ। अखिल भारतीय एकीकृत सोयाबीन शोध परियोजना के शुभारंभ में सोयाबीन की खेती को वास्तविक प्रोत्साहन सत्तर के दशक में मिला। मध्यप्रदेश को आज सोयाबीन प्रदेश कहलाने का गौरव भारत सरकार द्वारा वर्ष 1980–81 में दी गई मानद उपाधि के कारण प्राप्त है।

सोयाबीन की खेती का रकबा 1968 में 300 हेक्टेयर था जो 1970 में बढ़कर 1600 हेक्टेयर, 1980–81 में लाख 4.5 हैक्टेयर, तथा 1982–83 में 9 लाख हेक्टेयर हो गया। 1985–86 के अंत तक प्रदेश में सोयाबीन का कुल रकबा 18 लाख हेक्टेयर करने का लक्ष्य है। प्रदेश में सोयाबीन की उपज 15–16 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। वर्तमान में सामान्य रूप से बोयी जाने वाली किस्में जे.एस.2, व पंजाब 1 तथा जे.एस. 72 गौरव जे.एस.72–80 (दुर्गा) अंकुर, ब्रेग आदि प्रमुख है। इन वर्तमान किस्मों की शुरूआत अमेरिका के एडविन रे ने अनेकों किस्में मंगवाकर प्रदेश में स्थित जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में उनके प्रारंभिक अध्ययन द्वार की गई। इसके बाद से प्रदेश में किस्मों के विकास का सिलसिला चल पड़ा।

पिछले 12 वर्षों के दौरान् प्रदेश में सोयाबीन की उपज 20 हजार टन से 12 लाख टन तक हुई। सातवीं पंचवर्षीय योजना के अंत तक 25 लाचख भी टन उत्पादन करने का लक्ष्य रखा गया है।

सोयाबीन के बढ़ते हुए महत्व को देखते हुए वर्ष 1979 सोयाबीन प्रासेसर्स आफ इंडिया (सोया) की स्थापना हुई। यह सोयाबीन उद्योग का एक प्रतिनिधि संगठन है।

मध्यप्रदेश में इस समय 40 सोयाबीन प्रोसेसिंग संयत्र है जिनकी क्षमता 20 मी. टन से 300 मी. टन प्रतिदिन है। इन संयंत्रों की कुल वार्षिक क्षमता 13.5 लाख टन है शीघ्र ही 200 से 400 टन वाले 12 नये संयंत्र स्थापित हो रहे हैं। इनकी वार्षिक उत्पादन क्षमता 9.40 लाख टन होगी। इस उद्योग में लगभग 350 करोड़ रूपये है। इस उद्योग से करीब 15 हजार व्यक्ति तथा सोयाबीन के उत्पादन का मूल्य लगभग 350 करोड़ रूपये है। इस उद्योग से करीब 15 हजार व्यक्ति तथा सोयाबीन के उत्पादन में लगभग 5 लाख किसान परिवार लगे हुए है जो कि करीब 13 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन का उत्पादन कर रहे है।

मध्यप्रदेश में कृषि जोतों का आकार

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कृषि जोतों संबंधी आंकड़े प्राप्त करने के उद्देश्य से अंतर्राष्ट्रीय कृषि संस्थान, रोम द्वारा बनाई गई परियोजना 1924 के अनुसार, सर्वप्रथम, कृषि संगणना 1930 में कराई गई थी। संयुक्त राष्ट्र संघ के ''खाद्य एवं कृषि संगठन'' ने वर्ष 1950 में विश्व के विभिन्न देशों में कृषि संगणना का अयोजन किया। इस प्रकार भारत वर्ष में सर्वप्रथम कृषि संगणना 1950 में सम्पन्न हुई।

नीचे की तालिका में म.प्र.के कृषि जोतों की संख्या, आकार एवं क्षेत्रफल का दिखाया गया है :–

तालिका 2: मध्यप्रदेश में कृषि जोतों की संख्या, क्षेत्रफल तथा आकार (क्षेत्र हेक्टर में)

आकार (हेक्टर मे)	संख्या	क्षेत्रफल
0.5 – से कम	11,86,540	2,91,718
0.5 – 1.0	7,91,584	5,73,119
1.0 – 2.0	10,95,250	16,10,223
2.0 – 3.0	7,65,334	18,69,819
3.0 – 4.0	3,95,910	17,63,608
4.0 – 5.0	5,63,911	34,50,502
5.0 – 7.5	5,63,911	34,50,502
7.5 – 10.0	3,06,912	26.21.134
10.0 – 20.0	3,59,994	48,46,064
20.0 – 30.0	64,417	15,08,024
30.0 – 40.0	17,268	5,82,648
40.0 – 50.0	6,368	2,82,454
50.0 – और अधिक	7.231	5,62,082
कुल	60,61,140	2,16,91,177

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि, प्रदेश में कुल जोतों की संख्या 60.61 लाख एवं क्षेत्रफल 216.91 लाख है। इस तरह प्रदेश में

1979.77 की कृषि जनगणनानुसार औसत जोत का आकार 3.58 हेक्टेयर है। संख्या की दृष्टि से 0.5 हेक्टेयर से कम आकार वाले जोतों की संख्या अधिक है तथा 40.0 से 50.0 हेक्टेयर वाले खेतों की संख्या सबसे कम है। क्षेत्रफल की दृष्टि से 10.0 से 20.0 हेक्टेयर वाले जोतों का क्षेत्रफल अधिक एवं 40.0 से 50.0 हेक्टेयर वाले खेतों का क्षेत्रफल कम है।

उपरोक्त तालिका में 80.7 प्रतिशत क्षेत्रफल अकेली जोतों के अंतर्गत तथा 19 प्रतिशत क्षेत्रफल शामिल जोतों तथा 0.3 प्रतिशत क्षेत्रफल संस्थागत जोतों के अंतर्गत हैं।

प्रदेश के सबसे अधिक जोतों वाला संभाग रायपुर है। यहां कुल जोतें 9.76 लाख हैं। सबसे कम जोतों वाला संभाग होशंगाबाद है यहां 0.93 लाख जोतें हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से भी रायपुर संभाग सर्वाधिक क्षेत्रफल (130.49 लाख हेक्टेयर) वाला संभाग है एवं सबसे कम क्षेत्रफल वाला (5.29 लाख हेक्टर) संभाग होशंगाबाद है। जिले स्तर पर अधिक जोतों (4.87 लाख) वाला जिला बिलासपुर एवं कम जोतों (0.27 लाख) वाला जिला भोपाल है। इसी तरह सर्वाधिक क्षेत्रफल (10.01 लाख हेक्टेयर) वाला जिला रायपुर एवं सबसे कम क्षेत्रफल 1.38 लाख हेक्टेयर वाला जिला दतिया है।

मध्यप्रदेश में कृषि नियेाजन स्वतंत्रता से पूर्व कृर्षि नियोजन

पंचवर्षीय योजना के पूर्व 1947 तक देश में विदेशी शासन रहा उन्होंने अपनी औपनिवेशिक नीति के कारण कृषि विकास हेतु कोई ठोस प्रयास नहीं किया। ब्रिटिश सरकार ने कृषि विकास हेतु जो कुछ प्रयास किये वे प्रायः एकांगी थे। 1937 में बर्मा को भारत से अलग कर दिया जिससे बर्मा से भारत को 13 लाख टन चावल प्रतिवर्ष प्राप्त होता था वह आना बंद हो गया। 1947 में भारत पाकिस्तान विभाजन के परिणामस्वरूप हिन्दुस्तान के उपजाऊ क्षेत्र पाकिस्तान में चले गये और वहां से हिन्दुस्तानियों का आना शुरू हो गया। भारत संघ को अविभाजित भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 82 प्रतिशत भाग मिला किन्तु चावल एवं गेहूं उत्पन्न करने वाले क्षेत्रों का क्रमशः 68 तथा 65 प्रतिशत भाग ही प्राप्त हो सका। अतः विभाजन के परिणामस्वरूप देश में खाद्य पदार्थों की कमी 75 लाख टन बढ़ गयी।

स्वतंत्रता के बाद एवं नियोजन के पूर्व स्थिति

आजादी के पश्चात् जब देश में खाद्य संकट पैदा हो गया तब भारतीय सरकार ने विदेशों से खाद्यान्न का आयात किया। 1949 में देश में 37 लाख टन खाद्यान्न का आयात किया। देश का आर्थिक विकास कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में ही निहित है इस बात को ध्यान में रखते हुए शासन ने सर्वप्रथम 1947–48 में ''अधिक अन्न उपजाओं'' अभियान शुरू किया और अगले पांच वर्षों में 40 लाख टन अतिरिक्त खाद्यान्न उत्पादन का लक्ष्य रखा गया। 1947 में महात्मा गांधी क सुझावों पर अन्न पर से नियंत्रण हटा लिया गया । यह नियंत्रण 1943 में अन्न के अभाव एवं मूल्य में अत्याधिक वृद्धि के कारण सरकार द्वारा खाद्यान्न के मूल्यों पर लगाया गया था। 1948 में पुनः मूल्य नियंत्रण की नीति अपनायी क्योंकि अन्न के मूल्य में लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि हो गई थी। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक प्रकोप भी खाद्य समस्या को दबाने में सहायक रहे।

देश की खाद्य समस्या को सुलझाने एवं देश के आर्थिक विकास के लिए सोवियत संघ की भांति भारत सरकार ने योजनाओं का आश्रय लिया तथा योजना के माध्यम से देश का विकास किया जाने लगा।

संदर्भ सूची

1. अनुलेखा बसुः भारत में समाजवादी अर्थव्यवस्था नियोजना के संदर्भ में, मिततल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 1987
2. अग्रवाल एवं कोठारीः विपणन प्रबंध, नव युग साहित्य सदन, आगरा, 1985, अग्रवाल एवं श्रीवास्तवः व्यवहारिक अर्थशास्त्र मध्यप्रदेश पुस्तक प्रकाशन, भोपाल, 1972
3. ए.एन.अग्रवालः भारतीय अर्थव्यवस्था विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। ओम प्रकाश शर्माः भारत में कृषि तथा पशुपालन, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।
4. बालचंद श्रीवास्तवः बीमा के तत्व, साहित्य भवन, आगरा, 1985।
5. बृजभूषण सिंहः भूमि भूगोल तारा पब्लिकेशन, वाराणसी 1970।
6. शर्मा एवं वार्ष्णेयः आर्थिक नियोजन, साहित्य भवन, आगरा 1974।
7. सिन्हाः भारतीय अर्थशास्त्र, विकास संबद्ध, लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहबाद 1984।
8. शेखवत तथा जैनः भारतीय बैंकिंग प्रणाली, रमेश बुक डिपो, जयपुर 1984।
9. हीरालालः सागर सरोज, सुन्दर प्रेस सागर।
10. जे. आर. कुम्भट एवं अग्रवालः विपणन प्रबंध, किताब महल, इलाहबाद 1981।